काग़ज़ से स्क्रीन तक: बदलता हिंदी साहित्य

प्रवीण विलास चौगले

सहायक प्राध्यापक, कमला कॉलेज (स्वायत्त), कोल्हापुर.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263702

ABSTRACT:

हिंदी साहित्य ने सदियों से सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों और रचनात्मक अभिव्यक्ति को संरक्षित किया है। परंतु डिजिटल युग में इसका स्वरूप और भी व्यापक हो गया है। काग़ज़ पर छपने वाली परंपरागत पुस्तकें अब ई-पुस्तक, ऑडियोबुक, ब्लॉग, ऑनलाइन पत्रिकाओं और सोशल मीडिया के रूप में सामने आ रही हैं। तकनीक ने न केवल लेखन और प्रकाशन की प्रक्रिया को सरल बनाया है, किंतु पाठक और लेखक के बीच प्रत्यक्ष संवाद की संभावनाएँ भी खोली हैं। इस परिवर्तन ने साहित्यिक विधाओं, आलोचना, वितरण और वैश्विक प्रसार में नई दिशाएँ दी हैं। यद्यपि तकनीकी युग में चुनौतियाँ भी हैं—जैसे साहित्य की गुणवत्ता, कॉपीराइट और गहन पठन की समस्या—फिर भी यह स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य का भविष्य डिजिटल माध्यमों में और अधिक सशक्त रूप से स्थापित होगा।

KEYWORDS:

साहित्य, डिजिटल युग, मौखिक, ई-बुक्स, तकनीकी, सोशल मीडिया।

प्रस्तावना:

साहित्य किसी भी समाज का दर्पण माना जाता है। यह न केवल समय की धड़कनों को पकड़ता है, वरन् आने वाली पीढ़ियों के लिए अनुभव और विचारों का भंडार भी निर्मित करता है। हिंदी साहित्य ने अपने आरंभ से ही समाज के विविध आयामों को शब्दबद्ध किया है। मौखिक परंपरा से लेकर पांडुलिपियों तक और छपाई के युग से लेकर डिजिटल माध्यम तक हिंदी साहित्य का सफर समय और प्रौद्योगिकी के साथ बदलता रहा है।

आज हम जिस युग में जी रहे हैं, उसे सूचना और तकनीक का युग कहा जाता है। इसने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा। आज साहित्य केवल कागज़ पर सीमित नहीं है; वह मोबाइल स्क्रीन, लैपटॉप और टैबलेट पर भी जीवंत है। यह यात्रा "काग़ज़ से स्क्रीन तक" की है, जो साहित्य को नए रूप, नए पाठक और नए अवसर प्रदान कर रही है।

1. मुद्रण से डिजिटल युग तक: ऐतिहासिक विकास

किसी भी संकल्पना को समझने के लिए उसके प्रारंभ से लेकर उसकी विकास मार्ग को समझना आवश्यक है। भाषा का उदय भी व्यावहारिकता से लेकर साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हुआ दिखाई देता है। इसी कारण हिंदी साहित्य की यात्रा को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक विकास पर एक दृष्टि डालना आवश्यक है।

1.1 मौखिक परंपरा और पांडुलिपियाँ:

किसी भी भाषा के विकास हेतु हजारों सालों का समय लगता है। मनुष्य आपसी संपर्क के लिए भाषा का प्रयोग मौखिकता के आधार पर करने लगा था, इसीलिए हम कह सकते हैं कि प्रारंभिक काल में साहित्य मौखिक परंपरा से संरक्षित था। ऋषि-मुनि, भाट और कवि अपनी रचनाओं का वाचन करते थे। बाद में ताड़पत्र, भोजपत्र और कागज़ पर हस्तलिखित पांडुलिपियाँ तैयार हुईं।

1.2 मुद्रण युग का आगमन:

भाषा का एक सुव्यवस्थित एवं प्रचलित रूप समाज में मान्यता

प्राप्त होने लगा, तो मौखिकता को लिखित रूप में परिवर्तित करना आवश्यक होने लगा। भाषा की उत्पत्ति इसी आवश्यकता के माध्यम पर प्रारंभ हुई दिखाई देती है। जैसे-जैसे समय परिवर्तित होने लगा, उसी के अनुसार मुद्रण के आधार पर भाषा को एक विशेष प्रारूप प्राप्त हुआ दिखाई देता है। 19वीं शताब्दी में छापाखाने के विकास ने साहित्य को व्यापकता प्रदान की। "उदंत मार्तंड" (1826) जैसे समाचारपत्र और बाद की पत्रिकाओं ने हिंदी भाषा और साहित्य को जन-जन तक पहुँचाया। भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, निराला जैसे साहित्यकारों की रचनाएँ पुस्तक रूप में प्रकाशित होकर समाज को प्रभावित करती रहीं।

1.3 डिजिटल क्रांति की शुरुआत:

आधुनिक युग की देन अर्थात संगणक को माना जाता है। जिसके आधार पर भाषा के प्रचार-प्रसार में काफी परिवर्तन आया हुआ दिखाई देता है। यही संगणक युग अर्थात डिजिटल युग इस नाम से पहचाना जाता है। 20वीं शताब्दी के अंतिम दशक और 21वीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में कंप्यूटर और इंटरनेट का प्रसार हुआ। 2000 के बाद हिंदी वेबसाइटें, ब्लॉग, ई-बुक्स और ऑनलाइन पत्रिकाएँ सामने आने लगीं। धीरे-धीरे साहित्य स्क्रीन पर स्थानांतरित होने लगा।

2. ई-साहित्य: हिंदी साहित्य का नया स्वरूप:

व्यावहारिक भाषा साहित्यिक भाषा का रूप प्राप्त करने के उपरांत किताबों के माध्यम से साहित्य यात्रा का प्रारंभ दिखाई देता है। साहित्यकार अपने विचारों, भावनाओं को शब्दबद्ध करके किताबों के माध्यम से प्रकाशित कर समाज के सामने रखता था, लेकिन आज का युग आधुनिक युग के नाम पर पहचाना जाता है, जिसमें ई-साहित्य इस नई प्रणाली का आगाज दिखाई देता है। ई-साहित्य वह है, जो डिजिटल माध्यमों के जरिए सृजित और प्रसारित होता है।

2.1 ई-पुस्तकें:

ई-पुस्तकें (E-Books) ऐसी डिजिटल पुस्तकें होती हैं, जिन्हें कंप्यूटर, मोबाइल या ई-रीडर पर पढ़ा जा सकता है। ये PDF, EPUB, MOBI जैसे विभिन्न फॉर्मेट में उपलब्ध रहती हैं। इनका सबसे बड़ा लाभ यह है कि कम जगह में हजारों पुस्तकों का संग्रह संभव है और इन्हें

आसानी से कहीं भी ले जाया जा सकता है। साथ ही, ये पर्यावरण के लिए भी अनुकूल हैं, क्योंकि इनमें कागज़ का उपयोग नहीं होता। आज किंडल, गूगल बुक्स और अन्य प्लेटफ़ॉर्मों पर हजारों हिंदी ई-पुस्तकें उपलब्ध हैं।

2.2 ऑनलाइन पत्रिकाएँ:

ऑनलाइन पत्रिकाएँ (Online Magazines) इंटरनेट के माध्यम से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ हैं, जिन्हें मोबाइल, कंप्यूटर या टैबलेट पर पढ़ा जा सकता है। इनमें समाचार, साहित्य, शिक्षा, मनोरंजन, खेल और शोध जैसे विविध विषय शामिल होते हैं। ये समय और स्थान की बाधाओं से मुक्त होती हैं तथा तुरंत उपलब्ध हो जाती हैं। ऑनलाइन पत्रिकाएँ प्रिंट पत्रिकाओं की तुलना में किफायती और पर्यावरण-अनुकूल होती हैं। लेकिन इंटरनेट की उपलब्धता और तकनीकी साधनों पर इनकी निर्भरता बनी रहती है। “अनुभूति”, “कविता कोश”, “हिंदी समय”, “गद्य कोश” जैसी वेबसाइटों ने हिंदी साहित्य को नए पाठक वर्ग तक पहुँचाया है। इन पर समकालीन कविताएँ, कहानियाँ और आलेख मुफ्त में उपलब्ध होते हैं।

2.3 ऑडियोबुक और पॉडकास्ट:

ऑडियोबुक ऐप्स (जैसे Audible, Pocket FM, Kuku FM) और यूट्यूब चैनल ने हिंदी साहित्य को श्रवणीय स्वरूप दिया। अब पाठक केवल पढ़ते ही नहीं, बल्कि सुनते भी हैं।

3. सोशल मीडिया और हिंदी साहित्य:

सोशल मीडिया ने साहित्य को लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान किया है। सोशल मीडिया ने हिंदी साहित्य को नए पाठकों और रचनाकारों से जोड़ा है। फेसबुक, ब्लॉग, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे मंचों पर कविताएँ, कहानियाँ और लेख तेजी से साझा किए जाते हैं। इससे नए लेखकों को अपनी पहचान बनाने का अवसर मिलता है। पाठक भी तुरंत प्रतिक्रिया और संवाद कर सकते हैं। इस तरह सोशल मीडिया ने हिंदी साहित्य के प्रसार और लोकप्रियता को नई दिशा दी है।

» **फेसबुक और इंस्टाग्राम:** युवा कवि और लेखक अपनी रचनाएँ पोस्ट कर त्वरित प्रतिक्रिया पाते हैं।

» **व्हाट्सऐप साहित्य:** लघु कथाएँ, शायरी और विचार एक क्लिक में हजारों लोगों तक पहुँचते हैं।

» **ऑनलाइन कवि सम्मेलन:** कोविड-19 काल में साहित्यिक गतिविधियों ने डिजिटल मंचों पर नया जीवन पाया।

» **रील्स और शॉर्ट वीडियो:** कविता वाचन और साहित्यिक चर्चाएँ लघु वीडियो के माध्यम से लोकप्रिय हो रही हैं।

4. साहित्यिक विधाओं पर तकनीक का प्रभाव:

तकनीक ने साहित्यिक विधाओं के स्वरूप और प्रस्तुति में बड़ा बदलाव लाया है। अब कविताएँ, कहानियाँ और उपन्यास ई-पुस्तक, ब्लॉग तथा ऑडियोबुक के रूप में उपलब्ध हैं। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने प्रकाशन को आसान और सुलभ बनाया है। पाठकों तक रचनाएँ तुरंत पहुँचने लगी हैं। इस प्रकार तकनीक ने साहित्य को वैश्विक और इंटरैक्टिव बना दिया है।

» **कविता:** कविता अब केवल संकलन या पत्रिकाओं तक सीमित नहीं है। ब्लॉग और सोशल मीडिया ने इसे त्वरित मंच दिया है। इंस्टा-पोएट्री की तरह हिंदी में भी "माइक्रो कविताएँ" लोकप्रिय हो रही हैं।

» **कहानी और उपन्यास:** ऑनलाइन धारावाहिक कहानियाँ और "वेब नॉवेल्स" का चलन बढ़ा है। कई लेखक अपनी रचनाएँ ई-बुक के रूप में सीधे प्रकाशित कर रहे हैं।

» **नाटक और नाट्य साहित्य:** यूट्यूब और ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म ने नाटक को दृश्यात्मक रूप में पुनर्जीवित किया है। डिजिटल रंगमंच का उदय हुआ है।

» **आलोचना और समीक्षा:** ब्लॉग और यूट्यूब चैनल ने आलोचना को जनसुलभ बनाया है। अब आलोचना केवल अकादमिक पत्रिकाओं तक सीमित नहीं है।

5. डिजिटल युग के लाभ:

साहित्य के दृष्टिकोण से डिजिटल युग ने रचना और पठन दोनों को सरल बनाया है। लेखक अब ब्लॉग, ई-पुस्तक और सोशल मीडिया के माध्यम से तुरंत अपनी रचनाएँ साझा कर सकते हैं। पाठक भी ऑनलाइन

पत्रिकाओं, ई-बुक्स और ऑडियोबुक्स से साहित्य तक आसानी से पहुँच पा रहे हैं। साहित्यिक विमर्श अब वैश्विक स्तर पर संभव हो गया है। इस प्रकार डिजिटल युग ने साहित्य को अधिक व्यापक, संवादात्मक और जीवंत बना दिया है।

» **सुलभता और सुविधा –** मोबाइल पर हजारों पुस्तकें उपलब्ध।

» **वैश्विक पहुँच –** प्रवासी भारतीय और विदेशी शोधार्थी हिंदी साहित्य तक आसानी से पहुँच सकते हैं।

» **युवा पीढ़ी की भागीदारी –** तकनीक ने युवाओं को साहित्य से जोड़ा है।

» **लोकतांत्रिक स्वरूप –** कोई भी लेखक अपनी रचनाएँ प्रकाशित कर सकता है।

» **मल्टीमीडिया प्रयोग –** साहित्य अब केवल शब्दों तक सीमित नहीं, बल्कि चित्र, ध्वनि और वीडियो से समृद्ध हो रहा है।

6. चुनौतियाँ और समस्याएँ:

साहित्य के दृष्टिकोण से डिजिटल युग में कई चुनौतियाँ सामने आई हैं। ऑनलाइन माध्यमों पर साहित्य की गुणवत्ता और मौलिकता बनाए रखना कठिन हो गया है। कॉपीराइट उल्लंघन और साहित्यिक चोरी की समस्या बढ़ रही है। त्वरित प्रकाशन के कारण गंभीरता और गहनता कम होती दिखती है। साथ ही, पाठकों का ध्यान अल्पकालिक होकर सतही पठन तक सीमित होने लगा है।

» **गुणवत्ता का संकट –** हर सामग्री साहित्य नहीं होती।

» **कॉपीराइट उल्लंघन –** ई-पुस्तकों और पीडीएफ की अवैध कॉपी साझा होती है।

» **क्षणभंगुरता –** सोशल मीडिया पोस्ट का स्थायित्व कम।

» **भाषाई संकट –** देवनागरी की बजाय रोमन लिपि का बढ़ता चलन।

» **एकाग्रता की समस्या –** स्क्रीन पर पढ़ते समय ध्यान भटकना।

7. भविष्य की दिशा:

भविष्य में साहित्य डिजिटल तकनीक के और उन्नत स्वरूपों से जुड़ता जाएगा। ई-बुक्स के साथ ऑडियोबुक और इंटरैक्टिव साहित्यिक मंच अधिक लोकप्रिय होंगे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वर्चुअल रियलिटी के माध्यम से नए प्रयोग संभव होंगे। वैश्विक मंच पर हिंदी साहित्य को अधिक पाठक और मान्यता मिलेगी। इस प्रकार साहित्य का भविष्य अधिक डिजिटल, संवादात्मक और नवाचारी होगा।

» **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साहित्य –** एआई आधारित लेखन उपकरण साहित्यिक सृजन में नए प्रयोग ला रहे हैं।

» **वर्चुअल रियलिटी और इंटरैक्टिव साहित्य –** आने वाले समय में पाठक कहानी के पात्रों से संवाद कर सकेंगे।

» **डिजिटल आर्काइविंग –** राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय जैसे प्रयास साहित्य को स्थायी रूप से संरक्षित करेंगे।

» **ऑनलाइन प्रकाशन की स्वायत्तता –** लेखक बिना प्रकाशक के सीधे पाठक तक पहुँच सकता है।

निष्कर्ष :

हिंदी साहित्य की यात्रा “काग़ज़ से स्क्रीन तक” केवल तकनीकी परिवर्तन की कहानी नहीं है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव का भी प्रतीक है। कागज़ का महत्व आज भी बना हुआ है, परंतु स्क्रीन ने साहित्य को वैश्विक बनाया है। चुनौतियाँ अनेक हैं, किंतु संभावनाएँ उससे कहीं अधिक हैं। तकनीक ने साहित्य को नए युग में प्रवेश कराया है, जहाँ पाठक और लेखक के बीच की दूरी समाप्त हो रही है।

संदर्भ सूची :

1. मिश्र, हरिशंकर, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2010.
2. द्विवेदी, नामवर सिंह, छायावाद और हिंदी आलोचना, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2005.
3. तिवारी, नगेंद्र, साहित्य और तकनीक, दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2018.
4. “हिंदी समय” – www.hindisamay.com
5. “कविता कोश” – www.kavitakosh.org
6. National Digital Library of India – www.ndl.iitkgp.ac.in
7. आचार्य, श्यामसुंदर, डिजिटल युग का हिंदी साहित्य, नई दिल्ली : हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2020.
8. गुप्ता, अशोक, हिंदी साहित्य और बदलता समाज, मुंबई : साहित्य प्रकाशन, 2017.

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:
The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:
© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.